श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम्

(मानितविश्वविद्यालयः)

बी-4 कुतुबसांस्थानिकक्षेत्रम्, नवदेहली-16

सप्तदिवसीया राष्ट्रिया विचारसागर-स्वाध्यायकार्यशाला

(दिनांक- 04.10.2017-10.10.2017)

कार्यशाला का प्रतिवेदन

भारतीय दार्शनिक अनुसन्धान परिषद्, नई दिल्ली एवं श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनाङ्क 04.10.2017 से 10.10.2017 तक **सप्त- दिवसीया राष्ट्रिया विचारसागर-स्वाध्यायकार्यशाला** का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्घाटन दिनाङ्क 04.10.2017 को वैदिकमङ्गलाचरण एवं माँ भगवती सरस्वती के समर्चन पूर्वक मा. कुलपति महोदय की अध्यक्षता में तथा प्रो. जी.सी. त्रिपाठी कुलपति, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के मुख्यातिथित्व एवं प्रो. कमलेशदत्त त्रिपाठी जी के विशिष्टातिथित्व में वाचस्पतिसभागार में सम्पन्न हुआ। उद्घाटन सत्र में आये हुये समस्त विद्वान् अतिथियों का स्वागत विद्यापीठ के आधुनिक विद्या संकाय प्रमुख एवं दर्शनविभागाध्यक्ष प्रो. हरेराम त्रिपाठी जी द्वारा किया गया। मुख्यातिथि प्रो. जी.सी. त्रिपाठी ने अपने उद्बोधन में भारतीय विद्याओं के आलोक में अद्वैतवेदान्त की महत्ता पर प्रकाश डाला। विशिष्टातिथि प्रो. के. डी. त्रिपाठी ने विचारसागर ग्रन्थ के महत्त्व को उद्घाटित करते हुए स्वामी निश्चलदास की अन्य रचनाओं के अध्ययन हेतु प्रेरित किया। इस अवसर पर प्रो. विन्ध्येश्वरी प्रसाद मिश्र एवं प्रो. धनञ्जय कुमार पाण्डेय का भी उद्बोधन हुआ। अध्यक्षीय उद्बोधन में विद्यापीठ के माननीय कुलपति प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय जी ने विचारसागर कार्यशाला में आये हुए समस्त प्रतिभागियों को विचारसागर ग्रन्थ की महत्ता से अवगत कराया साथ ही विद्यापीठ द्वारा समय-समय पर सम्पन्न होने वाली कार्यशालाओं के बारे में भी संकेत किया। उद्घाटन सत्र का संचालन कार्यशाला के संयोजक डॉ. शिवशङ्कर मिश्र द्वारा किया गया, तथा आये हुये अतिथियों का हार्दिक धन्यवाद भारतीय दार्शनिक अनुसन्धान परिषद् के प्रतिनिधि डॉ. सुशीम दुबे जी ने किया।

कार्यशाला में भारत के विभिन्न प्रान्तों के विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों तथा विद्यापीठ के प्राध्यापकों एवं शोधच्छात्रों को मिलाकर 53 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया। कार्यशाला में प्रतिभागियों के अध्यापन हेतु देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों से कुल 06 विशिष्ट विद्वान् उपस्थित होकर अध्यापन कार्य सम्पन्न किया।

दिनांक- 04.10.2017 से 10.10.2017 तक सम्पन्न हुई कार्यशाला के विभिन्न सत्रों में विद्वानों द्वारा दिये गये विशिष्ट व्याख्यान इस प्रकार है-

उद्घाटन सत्र के अनन्तर दिनाङ्क 04/10/2017 के तृतीय सत्र में प्रो. विन्ध्येश्वरी प्रसाद मिश्र एवं चतुर्थ सत्र में प्रो. धनञ्जय कुमार पाण्डेय ने अध्यापन कार्य कराया। दिनांक 05/10/2017 के प्रथम एवं द्वितीय सत्र में प्रो. विन्ध्येश्वरी प्रसाद मिश्र तथा तृतीय एवं चतुर्थ सत्र में प्रो. धनञ्जय कुमार पाण्डेय ने अध्यापन कार्य कराया। दिनाङ्क 06/10/2017 के प्रथम एवं द्वितीय सत्र में प्रो. गोदावरीश मिश्र जी का विशिष्ट व्याख्यान सम्पन्न हुआ, तृतीय एवं चतुर्थ सत्र में पुनः क्रमशः विन्ध्येश्वरी प्रसाद मिश्र एवं प्रो. धनञ्जय कुमार पाण्डेय का व्याख्यान सम्पन्न हुआ। दिनाङ्क 07/10/2017 के प्रथम एवं द्वितीय सत्र में प्रो. रामकिशोर त्रिपाठी जी ने अध्यापन कार्य कराया तथा तृतीय एवं चतुर्थ सत्र में प्रो. वशिष्ठ त्रिपाठी जी का व्याख्यान हुआ। दिनाङ्क 08/10/2017 को पुनः प्रथम एवं द्वितीय सत्र में प्रो. रामकिशोर त्रिपाठी जी का तथा सायं तृतीय एवं चतुर्थ सत्र में प्रो. वशिष्ठ त्रिपाठी जी का विशिष्ट व्याख्यान सम्पन्न हुआ। दिनाङ्क 08/10/2017 को प्रातः प्रथम सत्र में प्रो. रामकिशोर त्रिपाठी जी ने तथा द्वितीय सत्र में प्रो. वशिष्ठ त्रिपाठी जी ने अध्यापन कार्य सम्पन्न किया, तृतीय एवं चतुर्थ सत्र में डॉ. शिवशङ्कर मिश्र कार्यशाला संयोजक का विशि

कार्यशाला का समापन कार्यक्रम दिनांक 10.10.2017 को अपराह्न 2:00 बजे वाचस्पति सभागार में सम्पन्न हुआ। समापन सत्र की अध्यक्षता विद्यापीठ के यशस्वी कुलपति प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय जी तथा मुख्यातिथित्व डॉ. श्रीकृष्ण सेमवाल जी ने की। कार्यक्रम का आरम्भ डॉ. सुन्दरनारायण झा द्वारा वैदिक मङ्गलाचरण एवं कार्यक्रम के अध्यक्ष तथा मुख्यातिथि द्वारा दीप प्रज्ज्वलन, वाग देवी सरस्वती के समर्चन के साथ हुआ। कार्यक्रम की अग्रिम शृंखला में मुख्यातिथि डॉ. श्रीकृष्ण सेमवाल जी का स्वागत विद्यापीठ के कुलपति महोदय ने माल्यार्पण एवं उत्तरीय प्रदान के साथ किया। आधुनिक विद्या संकाय प्रमुख प्रो. हरेराम त्रिपाठी ने कार्यक्रम के अध्यक्ष माननीय कुलपति प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय जी का माल्यार्पण एवं उत्तरीय प्रदान द्वारा स्वागत किया। कार्यक्रम में उपस्थित समस्त विद्वानों एवं प्रतिभागियों का वाचिक स्वागत प्रो. हरेराम त्रिपाठी जी ने किया। वाचिक स्वागत के उपरान्त कार्यशाला के संयोजक डॉ. शिवशङ्कर मिश्र जी ने सूत्र रूप में कार्यशाला के प्रतिदिन तथा प्रत्येक सत्र में अध्यापन का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया। प्रतिभागीयों के पक्ष से डॉ. अनिलानन्द और श्री प्रभाकर पाण्डेय ने कार्यशाला के क्रियाकलाप एवं अपने-अपने अनुभव को बताया। इसके बाद मुख्यातिथि डॉ. श्रीकृष्ण सेमवाल जी ने अपने उद्बोधन में दर्शन शब्द को शास्त्र के साथ आधुनिक परिप्रेक्ष्य से जोडकर तत्त्वों का अन्वेषण करने को कहा। उन्होंने संस्कृत में दर्शन की सर्वाधिक उपादेयता को

भी स्पष्ट किया। मुख्यातिथि के उद्‌बोधन के पश्चात् अध्यक्षीय आशीर्वचनात्मक वक्तव्य में विद्यापीठ के कुलपति महोदय जी ने अपने विचार और दर्शन में तत्त्वत: अभेद सम्बन्ध को बताते हुए कहा कि दर्शन एक पद्धति है जिसमें प्रमाण मीमांसा, तत्त्वमीमांसा और विचार-मीमांसा की क्रमबद्धता है। कुलपति जी ने अपने आशीर्वचन द्वारा कार्यशाला की सफलता के लिए आयोजकों कर्मचारियों एवं प्रतिभागियों को शुभकामनाएँ दीं। अध्यक्षीय उद्‌बोधन के पश्चात् अध्यक्ष महोदय एवं मुख्यातिथि के कर कमलों द्वारा सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरण किया गया। प्रमाण पत्र वितरण के उपरान्त कार्यशाला के प्रतिभागी तथा विद्यापीठ के वेद विभाग के आचार्य सुन्दरनारायण झा जी ने कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए सबका धन्यवाद एवं कृतज्ञता व्यक्त किया। अन्त में शान्ति पाठ के साथ कार्यशाला का समापन किया गया।

डॉ. शिवशङ्कर मिश्र

(संयोजक- कार्यशाला)